प्रातः क्लास 10-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। क्योंकि सभी बच्चे यह जानते हैं कि हम आत्मा हैं। हम अपने घर, बहुत दूर देश से यहां आते हैं। आकर कर के इस शरीर में प्रवेश करते हैं। पार्ट बजाने। पार्ट आत्मा ही बजाती है। यहां बच्चे बैठे हैं अपने को आत्मा समझ बाप की याद में। क्योंकि बाप ने समझाया है याद से ही तुम बच्चों के जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे। इनको योग अग्नि भी कहा जाता है। वास्तव में योग भी नहीं कहना चाहिए। योग तो सन्यासी लोग सिखाते आये हैं, स्टुडन्ट का टीचर से भी योग होता है ना। बच्चों का बाप से योग होता है। यह है आत्माओं का और परमात्मा अर्थात बच्चों और बाप का मेला। मिलन। यह है कल्याण कारी मिलन। बाकी तो सभी है अकल्याण कारी। पतित दुनिया है ना। तुम प्रदर्शनी वा म्युजियम में समझाते हो तो आत्मा और परमात्मा का परिचय देना तो ठीक है। आत्मा एं सभी बच्चे हैं और वह है परमपिता। परम आत्मा जो परमधाम में रहती है। कोई भी अपने लौकिक बाप को परम पिता नहीं कहेंगे। परमपिता को दुःख में ही याद करते हैं। हे परम पिता। लौकिक बाप को परम पिता नहीं कहेंगे तो परमात्मा भी नहीं कहेंगे। परम आत्मा रहती ही है परमधाम में। अभी तुम आत्मा और परमात्मा का ज्ञान भी समझाते हो। जिसमें कोई वाद-विवाद भी करते हैं कि परमात्मा तो सभी में हैं। सर्वव्यापी है। जब तुम समझाते हो तो सिर्फ यह नहीं समझाना है कि वह बाप है। वह बाप भी है, शिक्षक भी है, सद्गुरु भी है। यह जरूर समझाना है। बाप तो है हम सभी भाई2 हैं। वह सभी आत्माओं का बाप है। भक्ति मार्ग में सभी भगवान बाप को याद करते हैं। क्योंकि भगवान से भक्ति का फल मिलता है। अथवा बाप से बच्चे वरसा लेते हैं। भक्ति का फल भगवान देते हैं बच्चों को। क्या देते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं। परन्तु तुमको सिर्फ बाप नहीं सिध करना है वह बाप भी है तो शिक्षा देने वाला भी है, सद्गुरु भी है। ऐसा समझाओ तो सर्व-व्यापी का ख्याल उड़ जाये। यह एड करो। वह बाप ज्ञान का सागर है। आकर कर के राजयोग सिखलाते हैं। वह हमारा टीचर भी है। टीचर सर्वव्यापी कैसे होगा। सिर्फ बाप कहने से इतना समझेंगे नहीं। डिबेट करो। बोलो वह टीचर भी है। शिक्षा देने वाला सर्वव्यापी कैसे हो सकता। टीचर जरूर अलग है। स्टुडन्ट अलग है। जैसे बाप अलग है वैसे बच्चे भी अलग हैं। आत्माएं परमात्मा बाप को याद करती हैं। उनकी महिमा करते हैं बाप ही। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। ज्ञान का सागर है। वह आकर हमको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। तो बाप के साथ टीचर भी जरूर सिध करो फिर सुप्रीम गुरु भी है। बाप से वर्सा क्या मिलता है वह तो ठीक है। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। हम स्वर्गवासी बनते हैं। साथ2 यह भी समझो दो बाप है। लौकिक बाप ने पालना किया फिर टीचर पास जाना पड़ता है पढ़ने लिए। फिर 60 वर्ष के बाद वानप्रस्त अवस्था में जाने लिए गुरु करना पड़ता है। बाप टीचर गुरु अलग2 होते हैं। यह बेहद का बाप तो सभी आत्माओं का बाप भी है, ज्ञान का सागर भी है, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप सत चित आनन्द स्वरूप है। सुख का सागर, शान्ति का का सागर .... है। उनकी महिमा शुरु कर दो क्योंकि दुनिया में मतभेद बहुत है ना। सर्वव्यापी अगर हो तो फिर टीचर का पढ़ावेंगे कैसे। फिर सदगुरु भी है। सभी को गाईड बन ले जाते हैं। शिक्षा देते हैं अर्थात याद सिखलाते हैं। भारत का प्राचीन योग भी गाया जाता है। पुराना तेपुराना है संगम पर नई और पुरानी दुनिया का बीच। तुम समझते हो आजसे 5000 वर्ष पहले बाप ने आकर अपना बना था और हमारा टीचर सद्गुरु भी बना था। वह तो जरूर हमारा बाबा ही है। बाबा ही नहीं है वह तो ज्ञान का सागर अर्थात टीचर है। हमको शिक्षा देते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। क्योंकि बीजरूप वृक्षपति है। वह जब भारत में आते हैं तब ही भारत पर वृहस्पत की दशा बैठती है। सभी वृहस्पत की दशा में हैं। फिर जब दुनिया तमोप्रधान होती है तो सभी राहू की दशा बैठती है। वृक्षपति को कोई भी नहीं जानते न जानने से फिर वरसा कैसे मिल सकता। तो तुम यहां जब बैठते हो तो अशरीरी होकर बैठो। यह तो ज्ञान

मिला है आत्मा अलग है घर अलग है। पांच तत्वों का पुतला(शरीर) बनता है उसमें ही आत्मा प्रवेश करती सभी का पार्ट नूंधा हुआ है। पहले2 मुख्य बात तो समझानी है कि बाप सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी हैं। लौकिक और पारलौकिक बाप टीचर गुरु का फर्क बताने से झट समझेंगे। डिबेट नहीं करेंगे। आत्माओं के बाप में सारा ज्ञान है। वही हमको रचना के आदि मध्य अन्त का सारा राज़ समझाते हैं। आगे ऋषि मुनि तो कहते थे हम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। क्योंकि उस समय वह सतोप्रधान थे। हर चीज़ सतोप्रधान सतो रजो तमो में आती ही हैं। नई से पुरानी जरूर होती है। तुमको इस सृष्टि चक्र की आयु का भी मालूम है। मनुष्य यह भूल गये हैं कि इनकी आयु कितनी है। बाकी यह शास्त्र आद सभी भक्ति मार्ग के लिए बनाई हैं। बहुत पपोड़े लिख दिये हैं। सभी का बाप तो एक ही है। सदगति दाता सद्गुरु एक है। गुरु तो अनेक हैं। सदगति करने वाला सद्गुरु एक ही होता है। सदगति कैसे होती है वह भी तुम्हारी बुद्धि में है। आदि सनातन देवी देवता धर्म को ही सदगति कहा जाता है। वहां थोड़े मनुष्य होते हैं। अभी कितने ढेर मनुष्य हैं। वहां तो सिर्फ देवताओं का ही राज्य होगा। फिर बाद में डिनायस्टी वृद्धि को पाती हैं। ल०ना० दी फर्स्ट, सेकण्ड थर्ड चलता है। जब फर्स्ट होगा तो कितने थोड़े मनुष्य होंगे। यह ख्यालात सिर्फ तुम्हारी ही चलती है। यह तो समझने ही भगवान सभी बच्चों का बाप एक ही हैं। वह है बेहद का बाप। हद के बाप से हद का वरसा मिलता है बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है2। पीढ़ी स्वर्ग की शाही। 2। पीढ़ी अर्थात जब बुढ़ापा होता है तब ही शरीर छोड़ते हैं। वहां अपने को आत्मा जानते हैं। यहां आत्मा देह अभिमानी होने कारण जानती नहीं है कि आत्मा ही एक शरीर छोड़ कर दूसरा लेती है। अभी देह-अभिमानीयों को आत्माभिमानी कौन बनावे। साधु सन्त आद सभी देहाभिमानी है। आत्माभिमानी एक भी नहीं। आकर बाप ही आत्माभिमानी बनाते हैं। वहां जानते हैं आत्मा बड़ा शरीर छोड़कर जाये छोटा बच्चा बनेगा। सर्प का मिशाल है। यह सर्प का भ्रमरी का आद का मिशाल इससमय के हैं। जो फिर भक्ति मार्ग में काम में लग आते हैं। वास्तव में ब्राह्मणियां तोतुम ही जो विष्टा के कीड़ों को भूं2 कर मनुष्य से देवता बना देते हो। बाप में नालेज है ना। वही ज्ञान का सागर शान्ति का सागर है। सभी शान्ति मांगते रहते हैं। शान्ति देवा.... किसको पुकारते हैं। जो शान्ति का दाता अथवा सागर है। उनकी महिमा भी गाते हैं परन्तु अर्थ रहित कह देते हैं। समझते कुछ भी नहीं। 63 जन्म भक्ति करनी ही है। कितने ढेर शास्त्र हैं। वे कोई शास्त्र आद पढ़ने से नहीं मिलता हूं। मुझे पुकारते ही हैं आकर पावन बनाओ। परन्तु माया ऐसी है जो फिर जाते हैं गंगा में स्नान करने लाखों मनुष्य जाते हैं। समझते हैं पतित पावनी गंगा है। स्नान करते आत्मा शरीर सहित तमोप्रधान, किचड़ में पड़ती है। यह है ही तमोप्रधान किचड़े की दुनिया। कोई भी काम के नहीं। कितना दुःख है। दुःख कहां से आया। बाप ने तो तुमको बहुत ही सुख दिया। फिर तुम सीढ़ी कैसे उतरे। गाया भी जाता है ज्ञान और भक्ति। ज्ञान बाप सुनाते हैं। भक्ति रावण सुनाती है। देखने में न बाप आता है न रावण। दोनों को इन आंखों से नहीं देखा जाता। आत्मा को समझा जाता है। हम आत्मा हैं तो आत्मा का बाप भी जरूर है। बाप फिर टीचर भी बनते हैं। और कोई ऐसा होता ही नहीं। अभी तुम 21 जन्म लिए सदगति को पाते हो। फिर गुरु की दरकार ही नहीं रहती। बाप सभी का बाप भी है, पढ़ाने वाला है, सभी का सदगति करने वाला सदगुरु सुप्रीम गुरु भी है। तीनों को तो सर्वव्यापी कह नहीं सकते। वह तो सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ बताते हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। सभी नास्तिक हैं। प्राचीन ऋषि मुनि भी नेता2 कहते गये। वह सच्च कहते थे। पीछे अभी तमो० होने से झूठ बोलते हैं। कह देते हैं हम ही भगवान हैं। याद भी करते हैं हे पतित पावन आओ। सर्व का सदगति दाता आओ। सभी के दुःख हरो सुख दो। हे गाड फादर लिबरेटर। फिर हमारा गाईड भी बन ले चलने लिए। इस रावण राज्य से लिबरेट करो। रावण राज्य कोई लंका में नहीं है। इस सारी धरनी पर ही रावण

रावण राज्य है। रामराज्य सिर्फ सतयुग में ही होता है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितना मुंझ में चले गये हैं। कहते हैं व्यास भगवान ने शास्त्र बनाई। और भगवान ऐसे गपोड़े थोड़े ही लिखेंगे कि मैं सर्वव्यापी हूं। यह तो बहुत बड़े गपोड़े हैं। गीता है सर्व शास्त्र मई शिरोमणी। अभी तुमको श्रीमत मिल रही है श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनने लिए। सतयुग में भारत श्रेष्ठाचारी था। पूज्य थे। अभी राहू की दशा में भारत का देखो क्या हाल हो गया है। सभी अनराईटियस बन पड़े हैं। बाप राईटियस बनाते हैं। कहते भी हैं रामराज्य चाहिए तो रावण राज्य में हैं ना। नर्कवासी है। रावण राज्य को नर्क कहा जाता है। स्वर्ग और नर्क अलग2 हैं। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। रामराज्य किसको रावण राज्य किसको कहा जाता है। तो पहले2 तो यह निश्चय बुद्धि बनाना है वह हमारा बाप है। हम सभी आत्मा ब्रदर्स हैं। बाप से वरसा मिलने का हक है। मिला था। बाप ने यह राजयोग सिखा कर सुखधाम का मालिक बनाया था। बाकी सभी चले गये शान्तिधाम में। यह भी बच्चे जानते हैं वृक्षपति है चैतन्य। सतचित आनन्द स्वरूप है। आत्मा सत्य भी है चैतन्य भी है। बाप भी सत्य है चैतन्य है। वृक्षपति है। यह उल्टा झाड़ है ना। इनका बीज ऊपर में है। बाप ही आकर कर के समझाते हैं तुम तमोप्रधान बन जाते हो। फिर सतोप्रधान भी जरूर बनना है। हिस्ट्री जागरफी रिपीटहोती है। अभी तुमको कहते हैं हिस्ट्री जागरफी अंग्रेजी अक्षर नहीं बोलो। हिन्दी में है इतिहास भूगोल। इनका तो अर्थ ही नहीं निकलता। अंग्रेजी सभी लोग पढ़ते ही हैं। समझते हैं भगवान ने संस्कृत में गीता सुनाई। अभी श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स। वहां यह भारत भाषा थी ऐसे तो कहीं लिखा हुआ नहीं है। भाषा है जरूर। जो जो राजा होता है उनकी भाषा अपनी। सतयुग में राजाओं की भाषा अपनी होगी। संस्कृत वहां नहीं है। सतयुग की रसम रिवाज ही अलग। कलियुगी मनुष्यों की रसम रिवाज भी अलग। इन्हीं का विषय सागर में गोता खाना। यह विष खाना तो मीरा को भी पसन्द नहीं थी। अभी तुम कितने मीरायें हो। वह तो एक मीरा थी। अभी तुम सभी [illegible] कलियुग लोक लाज कुल की मर्यादा पसन्द नहीं करती हो। तुम कलियुगी लोकलाज छोड़ते [illegible] झगड़ाकितना हो जाता है। तुमको श्रीमत बाप ने दी है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। जगत जीत बनने वालों का यह चित्र तुम्हारे सामने खड़ा है। यह भी बच्चे जानते हैं विश्व में शान्ति सभी चाहते हैं। जो जो इस पर राय देते हैं तो उनको ईनाम देते हैं। तुमको तो बेहद की बाप से राय मिलती है कि विश्व में शान्ति कैसे स्थापन होगी। शान्तिदेवा कहने से बाप ही याद आता है। बाप ही आकर विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। कल्प कल्प। कल्प की आयु लम्बी कह देने से मनुष्य कुम्भकरण के नींद में जैसे कि सोये पड़े हैं। भक्ति मार्ग है ही दुर्गति मार्ग। ज्ञान को दुर्गति मार्ग नहीं कहेंगे। ऐसे2 अक्षर तुम प्रभात फेरी में बोलेंगे तो तुमको गाली देने लगेंगे। है तो राईट बात ना। ज्ञान और भक्ति। अभी तुमको भक्ति से वैराग्य है। यह है बेहद का वैराग्य। यह सभी बातें रूहानी की है। पहले2 तो यह पक्का निश्चय कराओ कि वह हमारा बाप भी है टीचर भी है सतगुरु भी है। एक ही सभी कुछ कैसे है वह बैठ समझो। शास्त्रों में तो यह कहीं भी लिखा हुआ नहीं है। यह है नई बात। यह तुम अच्छी रीत समझावेंगे तो फिर तुम से रड़ी नहीं मारेंगे। और वह तो टीचर भी है। टीचर को सर्वव्यापी कैसे कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो बाप कैसे आकर पढ़ाते हैं। इनके बायोग्राफी को जानते हो। बाप आते ही हैं नर्क को स्वर्ग बनाने। टीचर भी है फिर साथ भी ले जाते हैं। ले जाने वाला गाईड भी तो चाहिए ना। आत्मा तो अविनाशी है अपना2 पार्ट बजा कर अपने घर जाता है। दुःख से लिबरेट करते हैं फिर गाईड बन साथ में ले जाते हैं। बाप कहते हैं तुमको ऐसा लायक बनाया फिर नालायक किसने बनाया? रावण ने। अच्छा बच्चों को प्रेम आज सवेरे प्रभात फेरी पर जाना है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। बच्चों को नमस्ते।

*: : ****: : *